Std. VII L. 9 देखो, सोचो ,समझो (HINDI LIT.)

प्रश्न 1.कवि हमें किसे देखने -समझने को कह रहे हैं ?

उत्तर :--कभी हम मनुष्य को अपने जीवन तथा अपने आस-पास की चीज़ों को भली भाँति देखने समझने को कह रहे हैं क्योंकि हमारे आस-पास धरती पर जो कुछ भी होता है,उसका एक अपना उद्देश्य होता है।

प्रश्न 2. कवि किसे वैसा ही रहने को कह रहे हैं?

उत्तर:--कभी हम मनुष्यों को वैसा ही रहने को कह रहे हैं क्योंकि हमारे अंदर दया ,धर्म , आदि के गुण भरे पड़े होते हैं । ये सभी गुण हम मानव को जानवरों से भिन्न करते हैं ।इसलिए हमें अपने मानवीय गुणों में बदलाव नहीं लाना चाहिए ।

प्रश्न .3 .मानव अपने आपको कैसा और क्या समझता है?

उत्तर :--मानव अपने आप को चेतना से युक्त, विद्वान ,ज्ञानी , काबिल , कर्ता,गर्वीला प्राणी समझता है, जिसमें हर चीज़ को तर्क -वितर्क द्वारा समझने की क्षमता होती है ।

प्रश्न .4. कवि ने मानव को भोला क्यों कहा है?

उत्तर:--कवि ने मानव को भोला कहा है क्योंकि मानव में हर गुण भरे होते हैं लेकिन कभी-कभी वह किसी की बातों में आकर अपनी बुद्धि की न सुन , गलत काम कर बैठता है।

प्रश्न.5 .हम स्वार्थी होकर अपनों से ही क्यों लड़ने लगते हैं ?

उत्तर :---मनुष्य ऊपर से तो अपने आपको कठोर दिखाने की कोशिश करता है पर अंदर ही अंदर बहुत कमज़ोर होता है। जब उस पर किसी भी तरह की मुसीबत आती है तो वह उस मुसीबत की तह तक जाने की कोशिश करता है और इस तरह अपने आस-पास के लोगों पर भी शक करने लगता है। इस वजह से मानव अपने हित के लिए अपनों से उलझ पड़ता है।

प्रश्न .6.कवि ने दर्शन, मीमांसा को फ़ुरसत की बकझक क्यों कहा है ?

उत्तर:-- कवि ने कहा है कि हमारे अंदर सोचने और तर्क -वितर्क करने की भी क्षमता होती है। जब जीवन में कुछ ग़लत होता है तो मानव उसके तह तक जाने की कोशिश करता है। जब भी मानव को फ़ुरसत मिलती है तो इन बातों को अपने तर्क-वितर्क द्वारा समझने के प्रयास में लगा रहता है।

प्रश्न.7. कवि ने किसे सीमित बताया है? हमें उसे किस प्रकार जीना चाहिए ?

उत्तर --कवि ने हमारे जीवन को सीमित कहा है। हमारा जीवन बहुत छोटा है, जिसमें हर रंग भरे हुए हैं। हमें अपने जीवन को बेकार के कुतर्कों में नहीं गँवाना चाहिए, बल्कि हर रंग का आनंद उठाना चाहिए ।ज़िंदगी में जो कुछ भी मिले उसी में संतुष्ट होकर खुश रहना चाहिए ।अगर हमें जो न मिला, उसके लिए दुखी होंगे तो हम कभी भी अपने जीवन में प्राप्त सुखों का आनंद नहीं ले पाएँगे और ज़िंदगी यूँ ही बेकार में दुखी होकर गुज़रेगी।

प्रश्न .8.प्रस्तुत कविता के द्वारा कवि हमें क्या संदेश देना चाह रहे हैं?

उत्तर :--कवि संदेश देते हैं कि हमें अपने आस-पास की चीज़ों को अच्छी तरह देखना- समझना चाहिए, क्योंकि प्रकृति में कोई भी चीज़ बिना कारण नहीं होती। हमें अपने व्यक्तित्व में बदलाव नहीं लाना चाहिए तथा बेकार की बातों को सोच कर अपने आस-पास के लोगों पर शक नहीं करना चाहिए। जीवन में जो भी मिले, उसी में खुश रहकर आपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना चाहिए।

प्रश्न 9.निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट करें:--

I) देखो, सोचो, समझो, सुनो ,गुणों औ जानो इसको, उसको ,संभव हो निज को पहचानो।

------ कवि कहते हैं कि हमें अपने आसपास की चीज़ों को देखने ,समझने और पहचानने की कोशिश करनी चाहिए ।

II) चलने का अंत नहीं, दिशा ज्ञान कच्चा है भ्रमने का मार्ग ही सीधा है, सच्चा है ।

------कवि कहते हैं कि अगर हम एक रास्ता बना कर उसी पर आगे बढ़ेंगे तो वह रास्ता हमें सीधे अपने लक्ष्य की ओर ले जाएगा ।

III)धोखा है प्रेम - बैर, इसको तुम मत ठानो कड़ुआ या मीठा, रस तो है छककर छानो।

------ कवि कहते हैं कि धोखा, प्रेम, दुश्मनी सब जीवन का रस हैं और इस रस का आनंद उठाते हुए जीवन बिताना चाहिए।